Jai Prabhu

સંસ્કાર ધન

સંસ્કાર એક કલ્પ વૃક્ષ છે.
બાળકોમાં તેનું સિંચન કરવા માટેનો એક નાનો પ્રયાસ.

જેણે આત્મા જાણ્યો તેણે સર્વ જાણ્યું
- નિર્ગ્રંથ પ્રવચન -

Sanskaar the Kalpvruksh

A true Sanskaar is a path to etermal peace and a canopy to the society.

An online initiative to enroot true Sanskaar in blooming young kids on the basis of path followed by Shrimad Rajchandra Ashram, Agas.

Welcome to the World of Weekly Online sessions, including animated videos, quizzes, lovely gifts, etc.

JAI PRABHU

"धर्मध्यान लक्ष्यार्थथी[1] थाय
ए ज आत्महितनो रस्तो छे,
चित्तना संकल्पविकल्पथी
रहित थवुं ए महावीरनो
मार्ग छे. अलिप्तभावमां
रहेवुं ए विवेकीनुं
कर्तव्य छे."

—श्रीमद् राजचंद्र

१. आत्माना लक्षे

श्री संत (प्रभुश्रीजी)ना केहवाथी मारे परम कृपालुदेव नी आज्ञा मान्य छे

-: नित्यक्रम :-

1. तीन पाठ
2. सहजात्म स्वरुप परमगुरु (1 or 3 or 5 माला)
3. सात अभक्ष्य और सात व्यसन

अगास आश्रम मे आज्ञा देने का पवित्र स्थान जहाँ प्रभुश्री और पूज्यश्री स्वयं आज्ञा देते थे

....

3 मंत्र

सहजात्म स्वरुप परमगुरु

आतमभावना भावता जीव लहे केवलज्ञान रे !

परमगुरु निर्ग्रंथ सर्वज्ञ देव

7 अभक्ष्य

वड ना टेटा

पिपल ना टेटा

पिपली ना टेटा

मध

माखण

अंजीर

उमरडा

7 व्यसन

1.जुगार(Gambling)

2. मांस (Non Veg)

3. दारू(Liquor)

4.चोरी (Theft)

5. वेश्यागमन(Prostitution)

6. परस्त्रीगमन(Affair)

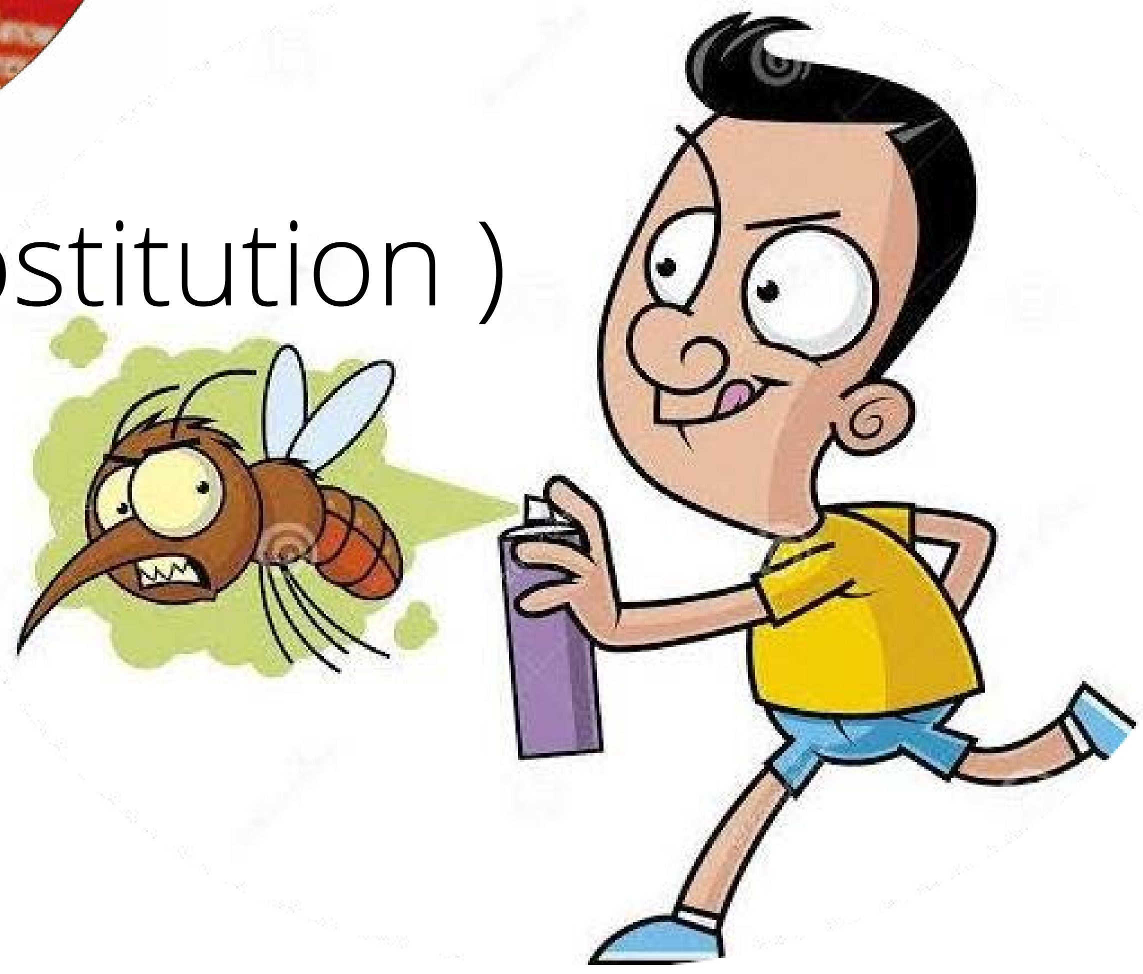

7. शिकार (Hunting)

Index

1. मंगलाचरण 1
2. जिनेश्वर नी वानी ....,,..............,.......2
3. वीस दोहरा 3
4. यम नियम 5
5. क्षमापना 6
6. प्रज्ञावबोध स्तुति 7
7. मेरी भावना 8
9. सायंकाल देववंदन 10
10.प्रणिपात स्तुति 13
11.भक्ति नो उपदेष.................................14
12.अमुल्य तत्वविचार 15
22.अढार पाप स्थानक नाम 16
23.छुटक वचन 17

ॐ

श्रीमद् सद्गुरवे नमोनमः

श्रीमद् राजचंद्र आश्रम

नित्यक्रम

(प्रातःकालनी भक्तिनो क्रम : समय ४-६॥)

१. मंगलाचरण

अहो ! श्री सत्पुरुषके वचनामृतं जगहितकरम्,
मुद्रा अरु सत्समागम सुति चेतना जागृतकरम्;
गिरती वृत्ति स्थिर रखे दर्शन मात्रसें निर्दोष है,
अपूर्व स्वभावके प्रेरक, सकल सद्गुण कोष है.

स्वस्वरूपकी प्रतीति अप्रमत्त संयम धारणम्,
पूरणपणे वीतराग निर्विकल्पताके कारणम्;
अंते अयोगी स्वभाव जो ताके प्रगट करतार है,
अनंत अव्याबाध स्वरूपमें स्थिति करावनहार है.

सहजात्म सहजानंद आनंदघन नाम अपार है,
सत्देव धर्म स्वरूप-दर्शक सुगुरु पारावार है;
गुरुभक्तिसें लहो तीर्थपतिपद शास्त्रमें विस्तार है,
त्रिकाळ जयवंत वर्तो श्री गुरुराजने नमस्कार है.

एम प्रणमी श्री गुरुराजके पद आप-परहित कारणम्,
जयवंत श्री जिनराज (गुरुराज)वाणी करुं तास उच्चारणम्;
भवभीत भविक जे भणे, भावे, सुणे समजे सद्दहे,
श्री रत्नत्रयनी ऐक्यता लही, सही सो निज पद लहे.
(सही सो परम पद लहे.)

२. जिनेश्वरनी वाणी

अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे;
सकल जगत हितकारिणी, हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि, मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाई में मानी छे;
अहो ! राजचंद्र, बाळ ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे.
(गुरुराज तणी वाणी जाणी तेणे जाणी छे.)

सं. १९४१ —श्रीमद् राजचंद्र

७. श्री सद्‌गुरुभक्तिरहस्य

(भक्तिना वीश दोहरा)

हे प्रभु ! हे प्रभु ! शुं कहुं, दीनानाथ दयाळ;
हुं तो दोष अनंतनुं, भाजन छुं करुणाळ. १

शुद्ध भाव मुजमां नथी, नथी सर्व तुजरूप;
नथीं लघुता के दीनता, शुं कहुं परमस्वरूप? २

नथीं आज्ञा गुरुदेवनी, अचळ करी उरमांहीं;
आप तणो विश्वास दृढ, ने परमादर नाहीं. ३

जोग नथी सत्संगनो, नथीं सत्सेवा जोग;
केवळ अर्पणता नथी, नथीं आश्रय अनुयोग. ४

'हुं पामर शुं करीं शकुं?' एवो नथी विवेक;
चरण शरण धीरज नथी, मरण सुधीनी छेक. ५

अचिंत्य तुज माहात्म्यनो, नथी प्रफुल्लित भाव;
अंश न एके स्नेहनो, न मळे परम प्रभाव. ६

अचळरूप आसक्ति नहि, नहीं विरहनो ताप;
कथा अलभ तुज प्रेमनी, नहि तेनो परिताप. ७

भक्तिमार्ग प्रवेश नहि, नहीं भजन दृढ भान;
समज नहीं निज धर्मनी, नहि शुभ देशे स्थान. ८

काळदोष कळिथी थयो, नहि मर्यादा धर्म;
तोय नहीं व्याकुळता, जुओ प्रभु मुज कर्म. ९

સંસ્કાર ધન
AN ONLINE KIDS PAATHSHAALA

सेवाने प्रतिकूल जे, ते बंधन नथीं त्याग;
देहेंद्रिय माने नहीं, करे बाह्य पर राग. १०

तुज वियोग स्फुरतो नथी, वचन नयन यम नाहीं;
नहि उदास अनभक्तथी, तेम गृहादिक मांहीं. ११

अहंभावथी रहित नहि, स्वधर्म संचय नाहीं;
नथीं निवृत्ति निर्मळपणे, अन्य धर्मनी कांई. १२

एम अनंत प्रकारथी, साधन रहित हुंय;
नहीं एक सद्‌गुण पण, मुख बतावुं शुंय? १३

केवळ करुणा-मूर्ति छो, दीनबंधु दीननाथ;
पापी परम अनाथ छुं, ग्रहो प्रभुजी हाथ. १४

अनंत काळथीं आथड्यो, विना भान भगवान;
सेव्या नहि गुरु संतने, मूक्युं नहि अभिमान. १५

संत चरण आश्रय विना, साधन कर्यां अनेक;
पार न तेथी पामियो, ऊग्यो न अंश विवेक. १६

सहु साधन बंधन थयां, रह्यो न कोई उपाय;
सत्‌साधन समज्यो नहीं, त्यां बंधन शुं जाय? १७

प्रभु प्रभु लय लागी नहीं, पड्यो न सद्‌गुरु पाय;
दीठा नहि निज दोष तो, तरीए कोण उपाय? १८

अधमाधम अधिको पतित, सकळ जगतमां हुंय;
ए निश्चय आव्या विना, साधन करशे शुंय? १९

पडी पडी तुज पदपंकजे, फरी फरी मागुं ए ज;
सद्‌गुरु संत स्वरूप तुज, ए दृढता करी दे ज. २०

राळज, सं० १९४७ —श्रीमद् राजचंद्र

११. कैवल्यबीज शुं ?

(त्रोटकछंद)

यम नियम संजम आप कियो,
पुनि त्याग बिराग अथाग लह्यो;
वनवास लियो मुख मौन रह्यो,
दृढ आसन पद्म लगाय दियो. १

मन पौन निरोध स्वबोध कियो,
हठजोग प्रयोग सु तार भयो;
जप भेद जपे तप त्यौंहि तपे,
उरसेंहि उदासी लही सबपें. २

सब शास्त्रनके नय धारि हिये,
मत मंडन खंडन भेद लिये;
वह साधन बार अनंत कियो,
तदपि कछु हाथ हजु न पर्यो. ३

अब क्यौं न बिचारत है मनसें,
कछु और रहा उन साधनसें ?
बिन सद्गुरु कोय न भेद लहे,
मुख आगल हैं कह बात कहे ? ४

करुना हम पावत हे तुमकी,
वह बात रही सुगुरु गमकी;
पलमें प्रगटे मुख आगलसें,
जब सद्गुरुचर्न सुप्रेम बसें. ५

तनसें, मनसें, धनसें, सबसें,
गुरुदेवकी आन स्व-आत्म बसें;
तब कारज सिद्ध बने अपनो,
रस अमृत पावहि प्रेम घनो. ६

वह सत्य सुधा दरशावहिंगे,
चतुरांगुल हे दृगसे मिलहे;
रस देव निरंजन को पिवही,
गहि जोग जुगोजुग सो जीवही. ७

पर प्रेम प्रवाह बढे प्रभुसें,
सब आगमभेद सुउर बसें;
वह केवलको बीज ग्यानि कहे,
निजको अनुभौ बतलाई दिये. ८

राळज, सं० १९४७ —श्रीमद् राजचंद्र

१२. क्षमापना

हे भगवान! हुं बहु भूली गयो, में तमारां अमूल्य वचनने लक्षमां लीधां नहीं. तमारां कहेलां अनुपम तत्त्वनो में विचार कर्यो नहीं. तमारां प्रणीत करेलां उत्तम शीलने सेव्युं नहीं. तमारां कहेलां दया, शांति, क्षमा अने पवित्रता में ओळख्यां नहीं. हे भगवन्! हुं भूल्यो, आथड्यो, रझळ्यो अने अनंत संसारनी विटम्बनामां पड्यो छुं. हुं पापी छुं. हुं बहु मदोन्मत्त अने कर्मरजथी करीने मलिन छुं. हे परमात्मा! तमारां कहेलां तत्त्व विना मारो मोक्ष नथी. हुं निरंतर प्रपंचमां पड्यो छुं. अज्ञानथी अंध थयो छुं. मारामां विवेकशक्ति नथी अने हुं मूढ छुं, हुं निराश्रित छुं, अनाथ छुं. नीरागी परमात्मा! हुं हवे तमारुं, तमारा धर्मनुं अने तमारा मुनिनुं शरण ग्रहुं छुं. मारा अपराध क्षय थई हुं ते सर्व पापथी मुक्त थउं ए मारी अभिलाषा छे. आगळ करेलां पापोनो हुं हवे पश्चात्ताप करुं छुं. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी ऊंडो ऊतरुं छुं तेम तेम तमारा तत्त्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे. तमे नीरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंदस्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो. हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षीए क्षमा चाहुं छुं. एक पळ पण तमारां कहेलां तत्त्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं, ए ज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान! तमने हुं विशेष शुं कहुं? तमाराथी कंई अजाण्युं नथी. मात्र पश्चात्तापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छुं.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

सं० १९४१ —श्रीमद् राजचंद्र

★

જય દેવ જિનેન્દ્ર મહાન,
જય અહો! જિનેન્દ્ર મહાન.

લાખો સુર-નર-પશુપંખીને ઉપકારી ભગવાન,
ક્ષુદ્ર સાધન-સામગ્રી મુજ, શું કરી શકું તુજ ગાન?
જય અહો! જિનેન્દ્ર મહાન,
જય દેવ જિનેન્દ્ર મહાન.

★

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર ગુરુ જ્ઞાની-શરણે મુજ હિત સાધું રે,
ભવ ભમતાં અતિ કષ્ટે પામ્યો ચરણ શરણ આરાધું રે.

★

વંદન ગુરુ-ચરણે થતાં પ્રભુ પાર્શ્વ વંદાય;
અભેદ ધ્યાને પરિણમ્યા તે રૂપ શ્રી ગુરુ રાય. ૧

★

અહોહો! પરમ શ્રુત-ઉપકાર!*
ભવિને શ્રુત પરમ આધાર.—ધ્રુવ.

પરમ શાંતિ પામ્યા તે નરને, નમું નિત્ય ઉલ્લાસે;
પરમ શાંતિરસ પ્રેમે પાયે, વર્તું તે વિશ્વાસે.

★

જ્ઞાની ગુરુ શ્રી રાજ પ્રભુજી શરદ -પૂર્ણશશી સમા,
લગુરાજ રૂડી વાદળી રૂપ બોધ- જળ-ભારે નમ્યા

★

તુજ સમ્મતિમાં મતિ હો મારી, ગળે દેહ-અભિમાન,
હૈયાનો ઉજ્જડ હું તેમાં વસજો રાજ પ્રધાન.*
જય અહો! જિનેન્દ્ર મહાન.
અહોહો! દેવ જિનેન્દ્ર મહાન. ૨૫

★

વીતી સૌ કૃષ્ણ રજનીઓ, ઊગ્યો આ રાજ તો ચંદ્ર,
નમાવે શિર કર જોડી, જનો ઉર ધારી આનંદ. ૧

★

મૈત્રીભાવ ભાવનાર માનવી મહાન છે,
વૈરભાવ ધારનાર મૈત્રીનો અજાણ છે.

★

વીનવું સદ્‌ગુરુ રાજચંદ્ર પ્રભુ, સત્ય તપસ્વી-સ્વામીજી,
નમી નમી પ્રભુને પાયે લાગું, આપ અતિ નિષ્કામીજી.

★

કૃપાળુની કૃપા ધારી, બનીશું પૂર્ણ બ્રહ્મચારી,
સમર્પી સર્વ સ્વામીને, તરીશું સર્વને તારી

१०. मेरी भावना

सद्‌गुरु श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठपद,—सेवाथी शुद्ध ज्ञान थशे;
अवर उपासन कोटि करो पण, श्रीहरिथी नहि हेत थशे.
(ए देशी)

जिसने रागद्वेषकामादिक जीते, सब जग जान लिया,
सब जीवोंको मोक्षमार्गका निःस्पृह हो, उपदेश दिया;
बुद्ध वीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो,
भक्तिभावसें प्रेरित हो यह, चित्त उसीमें लीन रहो. १

विषयोंकी आशा नहि जिनके, साम्यभाव धन रखते हैं,
निज परके हित साधनमें जो, निशदिन तत्पर रहते हैं;
स्वार्थ त्यागकी कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं,
ऐसे ज्ञानी साधु जगतके, दुःख समूहको हरते हैं. २

रहे सदा सत्संग उन्हींका, ध्यान उन्हींका नित्य रहे,
उनही जैसी चर्यामें यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे;
नहीं सताऊँ किसी जीवको, झूठ कभी नहि कहा करूँ,
परधन वनिता पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ. ३

अहंकारका भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ,
देख दूसरोंकी बढतीको, कभी न ईर्षा-भाव धरूँ;
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल सत्य व्यवहार करूँ,
बने जहाँ तक इस जीवनमें, औरोंका उपकार करूँ. ४

मैत्रीभाव जगतमें मेरा, सब जीवोंसे नित्य रहे,
दीन-दुःखी जीवो पर मेरे, उरसे करुणा स्रोत बहे;
दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझको आवे,
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे. ५

गुणीजनोंको देख हृदयमें, मेरे प्रेम उमड आवे,
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे;
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे,
गुण-ग्रहणका भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे. ६

कोई बुरा कहो या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे,
लाखों वर्षों तक जीऊँ या, मृत्यु आज ही आ जावे;
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे,
तो भी न्यायमार्गसें मेरा, कभी न पद डिगने पावे. ७

होकर सुखमें मग्न न फूले, दुःखमें कभी न घबरावे,
पर्वत नदी स्मशान भयानक, अटवीसे नहि भय खावे;
रहे अडोल अकंप निरन्तर, यह मन दृढतर बन जावे,
इष्टवियोग-अनिष्टयोगमें, सहनशीलता दिखलावे. ८

सुखी रहें सब जीव जगतके, कोई कभी न घबरावे,
वैर पाप-अभिमान छोड जग, नित्य नये मंगल गावे;
घर घर चर्चा रहे धर्मकी, दुष्कृत दुष्कर हो जावे,
ज्ञानचरित उन्नत कर अपना, मनुज जन्मफल सब पावे. ९

ईति-भीति व्यापे नहि जगमें, वृष्टि समयपर हुआ करे,
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजाका किया करे;
रोग-मरी-दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्तिसे जिया करे,
परम अहिंसा-धर्म जगतमें, फैल सर्व हित किया करे. १०

फैले प्रेम परस्पर जगमें, मोह दूर पर रहा करे,
अप्रिय कटुक कठोर शब्द नहि, कोई मुखसे कहा करे;
बनकर सब 'युग-वीर' हृदयसे, देशोन्नतिरत रहा करे,
वस्तु स्वरूप विचार खुशीसे, सब दुःख-संकट सहा करे. ११

२६. सायंकाळनी स्तुति तथा देववंदन

महादेव्याः कुक्षिरत्नं शब्दजीतवरात्मजम्;
राजचंद्रमहं वंदे तत्त्वलोचनदायकम्. १

जय गुरुदेव ! सहजात्मस्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्य स्वामी.

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमोनमः २

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान;
नमो ताहि जाते भये, अरिहंतादि महान. ३

विश्वभाव व्यापि तदपि, एक विमल चिद्रूप;
ज्ञानानंद महेश्वरा, जयवंता जिनभूप. ४

महत्तत्त्व महनीय महः महाधाम गुणधाम;
चिदानंद परमातमा, वंदो रमता राम. ५

तीनभुवन चूडारतन,-सम श्री जिनके पाय;
नमत पाईए आप पद, सब विधि बंध नशाय. ६

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्;
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्. ७

दर्शनाद् दुरितध्वंसि, वंदनाद् वांछितप्रदः
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिनः साक्षात् सुरद्रुमः ८

प्रभुदर्शन सुखसंपदा, प्रभुदर्शन नवनिधि;
प्रभुदर्शनसें पामिये, सकल मनोरथ-सिध्धि. ९

ब्रह्मानंदं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम्;
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षीभूतम्,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि. १०

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्,
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद् गुरुं नित्यमहं नमामि, ११

श्रीमद् परब्रह्मगुरुं वदामि श्रीमद् परब्रह्मगुरुं नमामि,
श्रीमद् परब्रह्मगुरुं भजामि श्रीमद् परब्रह्मगुरुं स्मरामि. १२

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः १३

ध्यानमूलं गुरुमूर्तिः पूजामूलं गुरुपदम्,
मंत्रमूलं गुरुवाक्यं मोक्षमूलं गुरुकृपा. १४

अखंडमंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्,
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः १५

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानांजनशलाकया,
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः १६

ध्यानधूपं मनःपुष्पं पंचेन्द्रिय हुताशनम्,
क्षमाजाप संतोषपूजा पूज्यो देवो निरंजनः १७

देवेषू देवोऽस्तु निरंजनो मे, गुरुर्गुरुष्वस्तु दमी शमी मे;
धर्मेषु धर्मोऽस्तु दया परो मे, त्रीण्येव तत्त्वानि भवे भवे मे, १८

परात्परगुरवे नमः परंपराचार्य गुरवे नमः
परमगुरवे नमः साक्षात् प्रत्यक्षसद्‌गुरवे नमोनमः १९

अहो ! अहो ! श्री सद्‌गुरु, करुणासिंधु अपार;
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो ! अहो ! उपकार. २०

शुं प्रभुचरण कने धरुं, आत्माथी सौ हीन;
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तुं चरणाधीन. २१

आ देहादि आजथी, वर्तो प्रभु आधीन;
दास, दास हुं दास छुं, आप प्रभुनो दीन. २२

षट् स्थानक समजावीने, भिन्न बताव्यो आप;
म्यानथकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप. २३

जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत;
समजाव्युं ते पद नमु, श्री सद्‌गुरु भगवंत. २४

नमस्कार

जय जय गुरुदेव ! सहजात्मस्वरूप परमगुरु शुद्ध चैतन्य स्वामी अंतरजामी भगवान, इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि.

परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परमज्ञान सुखधाम;
जेणे आप्युं भान निज, तेने सदा प्रणाम. २५

नमस्कार

जय जय गुरुदेव ! ....मत्थएण वंदामि.

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;
ते ज्ञानीना चरणमां, हो वंदन अगणित. २६

नमस्कार

जय जय गुरुदेव !...........मत्थएण वंदामि.

नमोऽस्तु नमोऽस्तु. नमोऽस्तु, शरणं, शरणं, शरणं, त्रिकालशरणं, भवोभव शरणं, सद्गुरु शरणं, सदा सर्वदा, त्रिविध त्रिविध भाववंदन हो, विनयवंदन हो, समयात्मक वंदन हो. ॐ नमोऽस्तु जय गुरुदेव शांति; परम तारु, परम सज्जन, परम हेतु, परम दयाळ, परम मयाळ, परम कृपाळ, वाणीसुरसाळ, अति सुकुमाळ, जीवदया प्रतिपाळ, कर्मशत्रुना काळ, 'मा हणो मा हणो' शब्दना करनार, आपके चरणकमलमें मेरा मस्तक, आपके चरणकमल मेरे हृदयकमलमें अखंडपणे संस्थापित रहें, संस्थापित रहें; सत्पुरुषोंका सत्स्वरूप, मेरे चित्तस्मृतिके पटपर टंकोत्कीर्णवत् सदोदित, जयवंत रहें, जयवंत रहें.

आनंदमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम्,
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद् गुरुं नित्यमहं नमामि.

१७. वंदन तथा प्रणिपातस्तुति

अहो ! अहो ! श्री सद्गुरु, करुणासिंधु अपार;
आ पामर पर प्रभु कर्यो, अहो ! अहो ! उपकार.

शुं प्रभु चरण कने धरुं, आत्माथी सौ हीन;
ते तो प्रभुए आपियो, वर्तुं चरणाधीन.

आ देहादि आजथी, वर्तो प्रभु आधीन;
दास, दास, हुं दास छुं, तेह प्रभुनो दीन.

षट् स्थानक समजावींने, भिन्न बताव्यो आप;
म्यान थकी तरवारवत्, ए उपकार अमाप.

जे स्वरूप समज्या विना, पाम्यो दुःख अनंत;
समजाव्युं ते पद नमुं, श्री सद्गुरु भगवंत.

परम पुरुष प्रभु सद्गुरु, परम ज्ञान सुखधाम;
जेणे आप्युं भान निज, तेने सदा प्रणाम.

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;
ते ज्ञानीना चरणमां, हो वंदन अगणित.

हे परमकृपाळु देव ! जन्म, जरा, मरणादि सर्व दुःखोनो अत्यंत क्षय करनारो एवो वीतराग पुरुषनो मूळधर्म (मार्ग) आप श्रीमदे अनंत कृपा करी मने आप्यो, ते अनंत उपकारनो प्रतिउपकार वाळवा हुं सर्वथा असमर्थ छुं; वळी आप श्रीमत् कंई पण लेवाने सर्वथा निःस्पृह छो; जेथी हुं मन, वचन, कायानी एकाग्रताथी आपना चरणारविंदमां नमस्कार करुं छुं. आपनी परम भक्ति अने वीतराग पुरुषना मूळधर्मनी उपासना मारा हृदयने विषे भवपर्यंत अखंड जागृत रहो एटलुं मागुं छुं ते सफळ थाओ.

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

२९. भक्तिनो उपदेश

(तोटक छंद)

शुभ शीतळतामय छांय रही, मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिनभक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो, भजीने भगवंत भवंत लहो. १

निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे, मनताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वणदाम ग्रहो, भजीने भगवंत भवंत लहो. २

समभावी सदा परिणाम थशे, जड मंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो, भजीने भगवंत भवंत लहो. ३

शुभ भाव वडे मन शुद्ध करो, नवकार महापदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो, भजीने भगवंत भवंत लहो. ४

करशो क्षय केवळ राग कथा, धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा;
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो, भजीने भगवंत भवंत लहो. ५

सं० १९४१ —श्रीमद् राजचंद्र

३१. अमूल्य तत्त्वविचार

(हरिगीत छंद)

बहु पुण्यकेरा पुंजथी, शुभ देह मानवनो मळ्यो,
तोये अरे! भवचक्रनो, आंटो नहीं एक्के टळ्यो;
सुख प्राप्त करतां सुख टळे छे, लेश ए लक्षे लहो,
क्षण क्षण भयंकर भावमरणे, कां अहो राची रहो? १

लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो?
शुं कुटुंब के परिवारथी, वधवापणुं ए नय ग्रहो;
वधवापणुं संसारनुं, नर देहने हारी जवो,
एनो विचार नहीं अहोहो! एक पळ तमने हवो!!! २

निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, ल्यो गमे त्यांथी भले,
ए दिव्य शक्तिमान जेथी जंजीरेथी नीकळे;
परवस्तुमां नहि मूंझवो, एनी दया मुजने रही,
ए त्यागवा सिद्धांत के पश्चात्‌दुःख ते सुख नहीं. ३

हुं कोण छुं? क्यांथी थयो? शुं स्वरूप छे मारुं खरुं?
कोना संबंधे वळगणा छे? राखुं के ए परहरुं?
एना विचार विवेकपूर्वक, शांत भावे जो कर्या,
तो सर्व आत्मिक ज्ञाननां, सिद्धांततत्त्व अनुभव्यां. ४

ते प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य केवळ मानवुं?
निर्दोष नरनुं कथन मानो 'तेह' जेणे अनुभव्युं;
रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो,
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो, आ वचनने हृदये लखो. ५

सं० १९४१ —श्रीमद् राजचंद्र

अढार पापस्थानक :–

पहेलुं पाप प्राणातिपात :–

बीजुं पाप मृषावाद :–

त्रीजुं पाप अदत्तादान :–

चोथुं पाप अब्रह्म :–

पांचमुं परिग्रह पापस्थानक :–

छठ्ठुं क्रोध पापस्थानक :–

सातमुं मान पापस्थानक :–

आठमुं माया पापस्थानक :–

नवमुं लोभ पापस्थानक :–

दशमुं राग पापस्थानक :–

अगियारमुं द्वेष पापस्थानक :–

बारमुं कलह पापस्थानक :–

तेरमुं अभ्याख्यान पापस्थानक :

चौदमुं पैशुन्य पापस्थानक :–

पंदरमुं परपरिवाद पापस्थानक :–

सोळमुं रतिअरति पापस्थानक :–

सत्तरमुं मायामृषावाद पापस्थानक :–

अढारमुं मिथ्यादर्शनशल्य पापस्थानक :–

छुटक वचन - वचनामृत, उपदेशामृत और बोधामृत

आत्मा छे
आत्मा नित्य छे
आत्मा कर्ता छे
आत्मा भोकता छे
मोक्ष छे।   अने   मोक्ष नो उपाय छे।

आत्मा नु कई नथी, आत्मा सर्वेथी भिन्न छे।

आत्माने सर्वथी भिन्न स्पष्ट जोवो. जेम उत्तर ने दक्षिण बे जुदा छे,
अंधकार अने प्रकाश जेम भिन्न छे तेम आत्मा भिन्न छे।
तेने पामवा सर्व कार्य करवु।

"जन्म मरण कोना छे ? जे तृष्णा राखे छे तेना।"

जीवे शु करवानु छे ?   भेद ज्ञान.
ते केवी रीते ?   तो के आ काया ते मारी नथी, वचन मन
पण मारा नथी। हु एथी भिन्न आत्मा छु।

एक भव ना थोड़ा सुख माटे अनंत भव नु अनंत दुःख नही वधारवानो
प्रयत्न सत्पुरुषो करें छे।

जेटली पोतनी पुदगलिक मोटाई इच्छे छे तेटला हलका संभवे
परमार्थ ऊपर प्रीति थवामा सत्संग ए सर्वोत्कृष्ट अने अनुपम साधन छे

સર્વ પ્રત્યે સદભાવ ટકી રહે તે ઉત્તમ નીતિ છે

પરમાર્થ ઉપર પ્રીતિ થવામાં સત્સંગ એ સર્વોત્કૃષ્ટ અને
અનુપમ સાધન છે

જેટલો ધર્મ આરાધ્યો હશે તેટલી આખરે શાંતિ
અને નિર્ભયતા રહેશે

વિનય સર્વનો કરવો

અળગણ પાણી પીઉં નહીં.

શાંત ચાલથી ચાલું.

વૈરભાવકોઈથી રાખુ નહીં.

જ્ઞાનીની નિંદા કરું નહીં.

માંસાદિક આહાર કરું નહીં.

વિદ્વાનોને સન્માન આપું.

પરમાત્માની ભક્તિ કરું.

રાત્રિભોજન કરું નહીં.